कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम,

कार्यक्रम परिणाम,

पाठ्यक्रम परिणाम एवं पाठ्य सामग्री

स्नातकोत्तर (हिंदी)

भाषा संकाय

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम (स्नातकोत्तर हिंदी)

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम **PSO**^{1}- विद्यार्थियों को लघु शोध-प्रबंध एवं शोध-पत्र लेखन हेतु प्रेरित करना

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम **PSO**^{2}- विद्यार्थियों को कक्षा में चर्चा-परिचर्चा एवं संवाद हेतु सहभागी बनाना

कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम **PSO**^{3}- विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण_पद्धति का विकास करते हुए सृजनात्मक उन्मेष पर बल |

कार्यक्रम परिणाम स्नातकोत्तर (हिंदी)

कार्यक्रम परिणाम **PO**^{1} - विद्यार्थियों के भीतर पाठ वाचन की परम्परा का विकास करना

कार्यक्रम परिणाम **PO**^{2}- साहित्यिक पाठ के सृजनात्मक एवं आलोचनात्मक पाठ हेतु प्रोत्साहन

कार्यक्रम परिणाम **PO**^{3}- विद्यार्थियों के भीतर व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक अभिक्षमता का विकास करना

कार्यक्रम परिणाम **PO**^{4}- साहित्यिक सौन्दर्य-बोध के साथ विद्यार्थियों की संवेदनात्मक एवं रागात्मिका-शक्ति का विकास

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय

भाषा संकाय

हिन्दी विभाग, सेमेस्टर-1

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL 510
पाठ्यक्रम का नाम : आदिकालीन साहित्य
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह / डॉ. प्रिया शर्मा
श्रेयांक : 4
श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के उद्भव से परिचित कराना |
* आदिकालीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का विकास करना |
* रासो, सिद्ध, नाथ, जैन एवं प्रकीर्णक साहित्य की समझ विकसित करना |
* आदिकालीन रचनाओं का पाठ-विश्लेषण |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. आदिकालीन साहित्यिक पाठ की समझ का विकास |
2. साहित्यिक आस्वादकता पर बल |
3. संवेदनात्मक अनुभूति का विकास |
4. सामाजिक अवस्थिति का ज्ञान |
5. मूल्य आधारित प्रोत्साहन |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्यावधि परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 हिन्दी साहित्य का आदिकाल : पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियाँ (6 घंटे)

1) हिंदी साहित्य का आदिकाल : एक परिचय
2) आदिकाल के नामकरण की समस्या
3) आदिकालीन परिस्थितियाँ : सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक

इकाई-2 सिद्ध एवं नाथ साहित्य (6 घंटे)

1) सिद्ध साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
2) सिद्ध साहित्य : प्रमुख कवि, साधना पद्धति, साहित्यिक योगदान
3) नाथ साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
4) नाथ साहित्य : प्रमुख कवि, साधना पद्धति, साहित्यिक योगदान

इकाई-3 जैन साहित्य (3 घंटे)

1) जैन साहित्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
2) जैन साहित्य : चरित काव्य एवं राम काव्य

इकाई-4 रासो काव्य परम्परा (11 घंटे)

1) रासो काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ, रासो काव्य परम्परा, प्रमुख रासो काव्य एवं कवि
2) पृथ्वीराज रासो : प्रमाणिकता का प्रश्न एवं काव्य सौष्ठव
3) पाठ विवेचन : चंद वरदाई- पृथ्वीराज रासउ (शशिवृता विवाह प्रस्ताव)

इकाई-5 लौकिक साहित्य एवं श्रृंगार काव्य परम्परा **(14 घंटे)**

1) लौकिक साहित्य एवं श्रृंगार काव्य : प्रमुख प्रवृत्तियाँ
2) अमीर खुसरो : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
3) पाठ विवेचन _ (सन्दर्भ ग्रन्थ- भोलानाथ तिवारी, 'अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य, पहेलियाँ : संख्या 2,3,2,7, बहिर्लालिका संख्या -9,3,28,30,31,37

गीत संख्या : 1,2,5,7, कव्वाली – 1,2

4) विद्यापति : कृतित्व, प्रकृति वर्णन, भक्ति एवं श्रृंगार, अपरूब के कवि
5) पाठ विवेचन : (सन्दर्भ : सं रामवृक्ष बेनीपुरी, विद्यापति पदावली, वंदना : पद संख्या 1,2 वयः संधि – पद संख्या- 4,9,12,13,14, वसंत पद संख्या- 174,179,181,184

संभावित ग्रन्थ –

आधार ग्रन्थ :

1. चंद वरदाई- पृथ्वीराज रासउ (पद्मावती समय) अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-6
2. अमीर खुसरो- अमीर खुसरो और उनका हिंदी साहित्य (संकलन भोलानाथ तिवारी),प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली-110002
3. विद्यापति पदावली (सं रामवृक्ष बेनीपुरी, लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद-1
4. अब्दुल रहमान –सन्देश रासक (आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और विश्वनाथ त्रिपाठी) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली- 1100 02

सन्दर्भ ग्रन्थ :

5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास,काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी,1969
6. बच्चन सिंह हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,राधाकृष्ण प्रकाशन,1996
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य का आदिकाल,पटना,1961
8. ब्रजरत्नदास (सम्पादन) खुसरो की हिन्दी कविता, नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी
9. हजारी प्रसाद ì²uÉåSï,नामवर सिंह (सम्पादन) संक्षिप्त पृथ्वीराज रासो, साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद
10. डॉ. वासुदेव सिंह (सम्पादन) आदिकालीन काव्य, विश्व विद्यालय प्रकाशन,वाराणसी

पाठ्यक्रम बोध रचना आदिकालीन साहित्य (HIL 510) –

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम s 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	1	3	2		1	3	2
CO2	1	3	1	-		1	1	3
CO3	1	2	1	3		3	3	2
CO4	2	1	-	3		2	1	3
CO5	1	2	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **410**
पाठ्यक्रम का नाम : कहानी
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह
श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को कहानी के विकास से परिचित कराना |
* विभिन्न कहानी आंदोलनों की स्पष्ट समझ विकसित करना |
* कहानी के आलोचनात्मक पाठ की अंतर्दृष्टि का विकास करना |
* प्रतिनिधि कहानियों के पाठ-विश्लेषण पर बल |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. कहानी के पाठ की समझ का विकास |
2. साहित्यिक बोध में अभिवृद्धि |
3. संवेदनात्मक अनुभूति का विकास |
4. सामाजिक अवस्थिति का ज्ञान |
5. मूल्य आधारित प्रोत्साहन |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्यावधि परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायोगिक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास (8 घंटे)

1) कहानी :अर्थ एवं स्वरूप
2) संस्कृत कथा साहित्य का विकास
3) हिन्दी की पहली कहानी :मनन एवं मंथन
4) हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास
5) एक टोकरी भर मिट्टी कहानी :समीक्षा एवं पाठ विश्लेषण
6) ग्यारह वर्ष का समय कहानी :समीक्षा एवं पाठ विश्लेषण

इकाई-2 प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानी (8 घंटे)

1) प्रेमचंद पूर्व हिन्दी कहानियाँ :प्रमुख प्रवृत्तियाँ
2) प्रेमचंद पूर्व कहानियों का विकास
3) पाठ विवेचन एवं समीक्षा :चंद्रधर शर्मा गुलेरी की‘ उसने कहा था ’कहानी

इकाई-3 प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी (8 घंटे)

1) प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानियाँ :प्रमुख प्रवृत्तियाँ
2) प्रेमचंद युगीन प्रमुख कहानियाँ एवं उनका विश्लेषण
3) प्रेमचंद युगीन कहानियों का शिल्पगत विकास
4) पाठ विवेचन एवं समीक्षा :प्रेमचंद की‘ कफन ’कहानी
5) पाठ विवेचन एवं समीक्षा :प्रसाद की‘ आकाशदीप ’कहानी

इकाई-4 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी (8 घंटे)

1) प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानियाँ :प्रमुख प्रवृत्तियाँ
2) प्रेमचंदोत्तर युगीन प्रमुख हिन्दी कहानियाँ एवं उनका विश्लेषण
3) प्रेमचंदोत्तर युगीन कहानियों का शिल्पगत विकास
4) पाठ विवेचन एवं समीक्षा :यशपाल की‘ चित्र का शीर्षक ’कहानी
5) पाठ विवेचन एवं समीक्षा :अज्ञेय की‘ गैंग्रीन ’कहानी
6) पाठ विवेचन एवं समीक्षा :रेणु की‘ तीसरी कसम’कहानी

इकाई-5 नई कहानी एवं समकालीन कहानी : दशा और दिशा (8 घंटे)

1) नई कहानी :प्रमुख प्रवृत्तियाँ
2) नई कहानी :विषय वस्तु एवं शिल्पगत विकास
3) पाठ विवेचन एवं समीक्षा :निर्मल वर्मा की‘ परिंदे ’कहानी
4) समकालीन कहानी :प्रमुख प्रवृत्तियाँ
5) समकालीन कहानी :प्रमुख प्रश्न और संभावनाएं
6) पाठ विवेचन एवं विश्लेषण :ओमप्रकाश वाल्मीकि की‘ सलाम ’कहानी

संभावित ग्रन्थ -

आधार ग्रन्थ :

1. कृष्ण कुमार)संपादन (प्रेमचंद की श्रेष्ठ कहानियाँ,वाणी प्रकाशन,दिल्ली
2. जयशंकर प्रसाद प्रतिनधि कहानियां ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
3. यशपाल भूख के तीन दिन,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद
4. गीतांजलि श्री)सम्पादन (अज्ञेय :कहानी संचयन,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली
5. फणीश्वर नाथ रेणु प्रतिनिधि कहानियां,राजकमल प्रकाशन ,नई दिल्ली
6. निर्मल वर्मा परिंदे ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली
7. ओमप्रकाश वाल्मीकि सलाम ,राधाकृष्ण प्रकाशन ,दिल्ली

सन्दर्भ ग्रन्थ :

8. देवीशंकर अवस्थी साहित्य विधाओं की प्रकृति ,राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली
9. परमानन्द श्रीवास्तव कहानी की रचना-प्रक्रिया,लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद,2012
10. गंगाधरन वी . प्रसाद की कहानियां सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन, वाणी प्रकाशन,दिल्ली
11. श्रीमती मृदुला प्रसाद अज्ञेय की कहानियों का वस्तु-शिल्प,प्रिय साहित्य सदन,

सोनिया विहार,दिल्ली,2010

12. देवी शंकर अवस्थी नयी कहानी: सन्दर्भ और प्रकृति,राजकमल,दिल्ली,1973

13 डॉ. आलोक राय कथाकार निर्मल वर्मा : दृष्टि और सृष्टि,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली

14. राजेन्द्र यादव कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति,वाणी,दिल्ली

पाठ्यक्रम बोध रचना कहानी (HIL 410) –

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम s 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	2	2	3	2		2	3	3
CO2	1	3	1	-		1	1	3
CO3	3	2	1	3		3	3	2
CO4	2	1	-	3		2	2	3
CO5	1	2	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **408**

पाठ्यक्रम का नाम : हिन्दी की उत्पत्ति, विकास और बोलियाँ: पुरानी हिन्दी, दकनी, भाषा परिचय

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. साएमा बानो / डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को भाषा की परिभाषा एवं प्रयोजन से परिचित कराना |

* हिंदी भाषा के क्रमिक विकास को उद्घाटित करना |
* हिंदी की विभिन्न बोलियों और उनके व्यावहारिक प्रयोग का उद्घाटन |
* दक्षिण में हिंदी के विकास को रेखांकित करना |
* राजभाषा की चुनौतियों एवं संभावनाओं पर बल |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. भाषा की संरचना एवं विकास का बोध |
2. भाषा एवं साहित्य की पारस्परिकता का ज्ञान |
3. संवेदनात्मक अनुभूति का विकास |
4. भाषा की सामाजिक अवस्थिति का बोध |
5. मूल्य आधारित शिक्षण को प्रोत्साहन |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई –1भाषा: अर्थ, स्वरूप और विशेषताएं

- भाषा -अर्थ ,परिभाषा और स्वरूप

- भाषा की विशेषताएँ
- भाषा और बोली में सम्बन्ध

इकाई –2 हिन्दी की ऐतिहसिक पृष्ठभूमि

- प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ
- मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ
- आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

इकाई–3 हिन्दी की उपभाषाएँ और बोलियाँ

- हिन्दी की प्रमुख बोलियों का परिचय
- काव्य भाषा के रूप में ब्रज और अवधी का विकास
- खड़ी बोली हिन्दी का उद्भव एवं विकास

इकाई–4 हिन्दी का अर्थ और विस्तार 8 घंटे

- हिन्दी :अर्थ और स्वरूप
- दकनी हिन्दी तथा उर्दू भाषा का विकास
- हिंदी-उर्दू अन्तःसम्बन्ध

इकाई–5 हिन्दी की संवैधानिक स्थिति

- राजभाषा और राष्ट्र भाषा के रूप में हिन्दी
- हिन्दी का मानक स्वरूप
- देवनागरी लिपि,विशेषताएँ तथा मानकीकरण

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ :</u>

1. *भाषा और समाज :रामविलास शर्मा*
2. *भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी :सुनीति कुमार चटर्जी*
3. *हिन्दी भाषा का इतिहास :धीरेन्द्र वर्मा*
4. *हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास :उदय नारायण तिवारी*
5. *हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास :भोलानाथ तिवारी*
6. *भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिन्दी :रामविलास शर्मा*
7. *भारतेंदु युग और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा :रामविलास शर्मा*

8. *हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास :रामस्वरूप चतुर्वेदी*

9. *हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम :रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव*

10. *हिन्दी भाषा :हरदेव बाहरी*

11. *भाषा विज्ञान :भोलानाथ तिवारी*

12. *आधुनिक भाषा विज्ञान :राजमणि शर्मा*

13. *उर्दू का आरंभिक युग :शम्सुर्रहमान फ़ारूकी*

14. *उर्दू भाषा और साहित्य :रघुपति सहाय' फिराक़ 'गोरखपुरी*

15. *हिंदी,उर्दू और हिन्दुस्तानी : पद्मसिंह शर्मा*

16. *दक्खिनी हिंदी :बाबुराम सक्सेना*

पाठ्यक्रम बोध रचना (हिन्दी की उत्पत्ति ,विकास और बोलियाँ :पुरानी हिन्दी , दकनी ,भाषा परिचय **HIL** 408(–

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम s 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	3	1	3	3		1	3	2
CO2	1	2	1	-		1	1	2
CO3	3	2	1	3		3	2	2
CO4	2	1	-	2		2	2	3
CO5	2	2	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **440**

पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी साहित्य का इतिहास : आरंभ से रीतिकाल तक

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. साएमा बानो / डॉ. प्रीति सिंह

श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास से अवगत कराना |
* आदिकाल के साहित्यिक, सांस्कृतिक परिदृश्य को उजागर करना |
* भक्तिकाल के समग्र विकास का पारिचय |
* रीतिकाल की कलागत एवं सौन्दर्यगत समझ विकसित करना |
* रीतिकाल के सामाजिक-सांस्कृतिक देय से अवगत कराना |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. हिंदी साहित्य को समग्रता में देखने की अंतर्दृष्टि में अभिवृद्धि |
2. आदिकालीन साहित्य के पाठ की समझ |
3. भक्तिकालीन साहित्य के पाठ की समझ |
4. रीतिकालीन साहित्य के पाठ की समझ |
5. वर्तमान समय में हिंदी साहित्य के प्राचीनतम दाय का महत्व |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%

*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई -1 साहित्येतिहास लेखन तथा काल विभाजन

- साहित्येतिहास का महत्त्व
- हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परम्परा
- हिन्दी साहित्य का इतिहास :काल विभाजन और नामकरण

इकाई - 2 आदिकाल

- हिन्दी साहित्य का आरम्भ ,आदिकाल की पृष्ठभूमि
- सिद्ध साहित्य ,नाथ साहित्य ,जैन साहित्य
- रासो साहित्य ,लौकिक साहित्य

इकाई -3 भक्तिकाल-एक

- भक्ति आन्दोलन के उदय की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
- संत काव्यधरा ,प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण कवि
- सूफ़ीकाव्यधारा ,प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण कवि

इकाई –4भक्तिकाल -दो

- रामभक्ति काव्यधारा ,प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण कवि
- कृष्ण भक्ति काव्यधारा ,प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण कवि
- भक्ति काल की उपलब्धियां एवं पतन के कारण

इकाई – 5 रीतिकाल

- रीति काल की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि,दरबारी संस्कृति और रीतिकाव्य
- रीतिबद्धतथा रीतिसिद्ध काव्यधाराएं प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण कवि
- रीतिमुक्त काव्यधाराएं प्रमुख प्रवृत्तियां एवं महत्वपूर्ण कवि

<u>सन्दर्भ ग्रन्थ :</u>

1. *हिन्दी साहित्य का इतिहास :रामचंद्र शुक्ल*
2. *हिन्दी साहित्य का इतिहास :सं .डॉ.नगेन्द्र*
3. *हिन्दी साहित्य का आदिकाल :हजारी प्रसाद द्विवेदी*
4. *हिन्दी साहित्य :उद्भव और विकास : हजारी प्रसाद द्विवेदी*
5. *हिन्दी साहित्य की भूमिका :हजारी प्रसाद द्विवेदी*
6. *साहित्य और इतिहास दृष्टि :मैनेजर पाण्डेय*
7. *महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण :रामविलास शर्मा*
8. *हिन्दी साहित्य का अतीत :विश्वनाथ प्रसाद मिश्र*
9. *हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास ;बच्चन सिंह*

पाठ्यक्रम बोध रचना हिंदी साहित्य का इतिहास : आरम्भ से रीतिकाल तक (HIL 440) –

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम s 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	2	3	3		2	2	3
CO2	1	3	2	-		1	1	3
CO3	3	2	1	3		3	3	2
CO4	2	1	-	3		2	1	2
CO5	3	2	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **401**
पाठ्यक्रम का नाम : खड़ी बोली के पूर्व का काव्य: नीति काव्य,राम काव्य,कृष्ण काव्य,सूफ़ी
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह
श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य

समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को हिंदी की भक्तिकालीन काव्य-धारा से अवगत कराना |
* भक्तिकालीन साहित्यिक, सांस्कृतिक परिदृश्य को उजागर करना |
* भक्तिकाल के पाठ की आलोचनात्मक क्षमता का विकास |
* भक्तिकाल की साहित्यिक एवं कलागत देन से अवगत कराना |
* छात्रों के भीतर ऐतिहासिक-बोध का विकास करना |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. भक्तिकालीन अंतर्धाराओं से परिचय |
2. भक्तिकाल की साहित्यिक आस्वादकता में निष्णात |
3. भक्तिकालीन साहित्य के पाठ की समझ |
4. वर्तमान समय में भक्तिकाल के अमूल्य दाय का महत्व |
5. भक्तिकालीन रचनाओं की व्याख्या-कौशल में अभिवृद्धि |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 खड़ी बोली के पूर्व **का** काव्य : भक्ति संदर्भ **(8 घंटे)**

1) भक्ति: उद्भव एवं विकास
2) विभिन्न सम्प्रदाय एवं भक्ति की अवधारणा
3) भक्ति आन्दोलन और हिन्दी आलोचना
4) हिन्दी भक्तिकाव्य :सामान्य प्रवृत्तियाँ ,साहित्यिक योगदान

इकाई-2 खड़ी बोली के पूर्व का नीतिकाव्य **(8 घंटे)**

1) भक्तिकालीन सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक,सांस्कृतिक दशा
2) नीतिकाव्य :प्रमुख विशेषताएँ ,प्रमुख कवि रचनाएं
3) कबीर :भक्ति,दर्शन,रहस्यवाद,सामाजिक विचार
4) कबीर :पाठ विवेचन] -कबीर ग्रंथावली ,श्यामसुंदर दास)सम्पादन - पद संख्या :1,2,3,4,5,6,8,16,19,21,43,45,49,51,55,
5) रैदास :भक्ति भावना,सामाजिक-चिंतन ,साधना-पद्धति,काव्य-सौष्ठव
6) रैदास :पाठ विवेचन] -रैदास बानी ,डॉ .शुकदेव सिंह) सम्पादन - पद संख्या :2,3,4,6,21,56,74,94,97,106,114,128,140,193(

इकाई-3 खड़ी बोली के पूर्व का सूफ़ीकाव्य **(8 घंटे)**

1) हिन्दी सूफी काव्य :विशेषताएँ
2) जायसी :रहस्यवाद,ग्राम-बोध,प्रबंध-कौशल,काव्य-भाषा
3) पद्मावत :ऐतिहासिक आधार,प्रेमतत्व,समासोक्ति-अन्योक्ति
4) पद्मावत :प्रकृति-चित्रण,सांस्कृतिक भूमि,समीक्षा
5) पद्मावत :पाठ विवेचन] - 'मानसरोदक खण्ड '(जायसी ग्रंथावली ,आचार्य रामचंद्र शुक्ल)सम्पादन(

इकाई-4 खड़ी बोली के पूर्व का रामकाव्य **(8 घंटे)**

1) तुलसी :भक्तिि पद्धति,लोक धर्म,समन्वय की भावना,काव्य-सौष्ठव
2) सुन्दरकाण्ड :कथावस्तु,रचना-दृष्टि,भाव पक्ष,कला पक्ष
6) सुन्दरकाण्ड :पाठ विवेचन] - 'सुन्दरकाण्ड '(श्रीराम चरित मानस :पंचम सोपान ,योगेन्द्र प्रताप सिंह
)सम्पादन(

इकाई-5 खड़ी बोली के पूर्व का कृष्ण काव्य **(8 घंटे)**

1) सूर :भक्तिभावना,बाल-वर्णन,वात्सल्य वर्णन
2) सूरसागर :प्रेमतत्व,कथावस्तु का वैशिष्ट्य
3) सूर सागर :पाठ विवेचन] -'गोकुल लीला '(सूरसागर सटीक :डॉ .धीरेन्द्र वर्मा)सम्पादन(
4) मीरा का काव्य :भक्ति आन्दोलन और कविता के सन्दर्भ में ,सामाजिक पक्ष , काव्यानुभूति,काव्य भाषा
5) मीराबाई की पदावली :पाठ विवेचन] -मीराबाई की पदावली भाग दो ,आचार्य परशुराम चतुर्वेदी) सम्पादन -

पद संख्या :17,19,21,33,35,74,75,76,83,86,89(

आधार ग्रन्थ :

1. श्यामसुन्दर दास)सम्पादन ('कबीर ग्रन्थावली',लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद-211001 ,

   द्वितीय संस्करण :2011
2. डॉ .सत्यनारायण सिंह मध्ययुगीन काव्य ,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी
3. डॉ .मोहनलाल तिवारी) संपादन('मलिक मुहम्मद जायसी और पद्मावत',विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी
4. डॉ.धीरेन्द्र वर्मा) संपादन ('सूर सागर 'सटीक ,साहित्य भवन प्रा.लि.56,इलाहाबाद
5. आचार्य परशुराम चतुर्वेदी मीराबाई की पदावली ,हिन्दी साहित्य सम्मेलन , प्रयाग,इलाहाबाद
6. योगेन्द्र प्रताप सिंह)सम्पादन (श्रीराम चरित मानस : पंचम सोपान सुन्दरकाण्ड , लोकभारती

   प्रकाशन,इलाहाबाद-1
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल)सम्पादन (जायसी ग्रंथावली,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली-110002
8. डॉ .शुकदेव सिंह) सम्पादन रैदास बानी ,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली

संदर्भ ग्रन्थ :

9. डॉ .सुमन शर्मा मध्यकालीन भक्ति-आन्दोलन का सामाजिक विवेचन,विश्वविद्यालय प्रकाशन,वाराणसी,प्रथम संस्करण: 1974

10. शिवकुमार मिश्र भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य ,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद-1, संस्करण :2012

11. आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास

12. परमानंद श्रीवास्तव)सम्पादन (सूरदास मूल्यांकन पुनर्मूल्यांकन ,अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद,प्रथम संस्करण :2003

11.. सदानंद साही (सम्पादन) जायसी :आकलन के आयाम,अभिव्यक्ति प्रकाशन,इलाहाबाद, संस्करण: 2006

12. आचार्य रामचंद्र शुक्ल गोस्वामी तुलसीदास',प्रकाशन संस्थान ,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण: 2004

13 पल्लव (सम्पादन) मीरा :एक पुनार्मूल्यांकन, आधार प्रकाशन,पंचकूला,हरियाणा

पाठ्यक्रम बोध रचना (खड़ी बोली के पूर्व का काव्य :नीति काव्य,राम काव्य,कृष्ण काव्य,सूफ़ी **HIL** 401(–

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम s 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	2	3	1		3	1	2
CO2	1	2	1	-		1	1	2
CO3	1	3	1	3		2	1	3
CO4	2	1	-	2		2	1	1
CO5	2	1	2	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **409**
पाठ्यक्रम का नाम : उपन्यास
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. साएमा बानो / डॉ. प्रीति सिंह
श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को हिंदी की उपन्यास विधा से परिचित कराना |
* प्रतिनिधि उपन्यासकारों की रचना का पाठ |
* प्रतिनिधि उपन्यासों की आलोचनात्मक व्याख्या |
* भारतीय सामाजिक बोध के अनुरूप उपन्यास देय |
* छात्रों के भीतर ऐतिहासिक-बोध का विकास करना |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. प्रतिनिधि उपन्यासों से परिचय |
2. उपन्यासों की साहित्यिक एवं कलागत देय से परिचय |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. ऐतिहासिक और सामाजिक अंतर्दृष्टि का विकास |
5. प्रतिनिधि रचनाओं के व्याख्या-कौशल में अभिवृद्धि |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड : क) मध्यावधि परीक्षा - 25%

ख) सत्रांत परीक्षा - 50%

ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन - 25%

*पुस्तकालय कार्य - 5%

*प्रायोगिक कार्य - 5%

*गृह-कार्य - 5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास

- हिन्दी में उपन्यास का आरम्भ
- भारतेन्दुयुगीन उपन्यासों की प्रवृत्तियां

इकाई-2 प्रेमचंदयुगीन हिन्दी उपन्यास

- प्रेमचंदयुगीन उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियां
- गोदान का पाठ-विश्लेषण तथा मूल्यांकन

इकाई-3 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास -1

1) प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की प्रमुख प्रवृत्तियां
2) शेखर एक जीवनी)भाग-1 (का पाठ-विश्लेषण तथा मूल्यांकन

इकाई-4 प्रेमचंदोत्तर हिन्दी उपन्यास -2

1) बाणभट्ट की आत्मकथा का पाठ-विश्लेषण तथा मूल्यांकन

ख] मैला आंचल का पाठ-विश्लेषण तथा मूल्यांकन

इकाई-5 समकालीन हिन्दी उपन्यास

1) समकालीनता की अवधारणा
2) रागदरबारी का पाठ-विश्लेषण तथा मूल्यांकन
3) तमस का पाठ-विश्लेषण तथा मूल्यांकन

<u>आधार ग्रन्थ -</u>

1. गोदान प्रेमचंद
2. शेखर एक जीवनी अज्ञेय
3. बाणभट्ट की आत्मकथा हजारी प्रसाद द्विवेदी
4. तमस भीष्म साहनी
5. रागदरबारी श्रीलाल शुक्ल
6. मैला आँचल फणीश्वर नाथ रेणु

सन्दर्भ ग्रन्थ –

8. प्रेमचंद और उनका युग रामविलास शर्मा
9. अज्ञेय के उपन्यास गोपाल राय
10. अठारह उपन्यास राजेन्द्र यादव
11. उपन्यास का विकास मधुरेश
12 उपन्यासकार हजारी प्रसाद द्विवेदी त्रिभुवन सिंह
13 उपन्यास की संरचना गोपाल राय
14 आधुनिक हिंदी उपन्यास सं. भीष्म साहनी, डॉ. रामजी मिश्र

पाठ्यक्रम बोध रचना (उपन्यास **HIL** 409(–

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	1	3	3		1	1	2
CO2	2	1	2	-		1	1	2
CO3	1	3	1	3		2	2	3
CO4	1	1	-	2		1	3	2
CO5	2	3	1	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम का नाम : खड़ी बोली का काव्य : प्रकृति काव्य
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह / डॉ. प्रिया शर्मा
श्रेयांक : **2**

श्रेय तुल्यमान: $_2$ श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों का छायावादी कविता के प्रति रुझान बढ़ाना |
* छायावादी रचनाओं के पाठ हेतु प्रोत्साहन |
* छायावादी कविता की सौन्दर्य-चेतना, प्रकृति-चेतना आदि के प्रति जागरूकता का संवर्धन |
* छायावादी कविताओं के भाषिक वैशिष्ट्य पर बल |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. छायावादी कविता के साहित्यिक प्रदेय से परिचय |
2. साहित्यिक एवं आलोचनात्मक विवेक का संवर्धन |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. सौन्दर्यपरक सूक्ष्म चेतना का अभिज्ञान |
5. प्रतिनिधि रचनाओं के व्याख्या-कौशल में अभिवृद्धि |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 खड़ी बोली प्रकृति काव्य : एक परिचय (4 घंटे)

* स्वच्छन्दतावाद,छायावाद :प्रमुख प्रवृत्तियाँ

* छायावाद :जागरण का स्वर,वैश्विक चेतना ,साहित्यिक अवदान

इकाई-2 महादेवी वर्मा का काव्य (4 घंटे)

* महादेवी वर्मा : जीवन दर्शन,रहस्यवाद
* महादेवी वर्मा का काव्य :प्रकृति वर्णन,वेदना तत्व ,गीति-तत्व
* महादेवी वर्मा की कविता का पाठ-विश्लेषण) संधिनी की प्रमुख कविताएँ : 2,3,4,5,7,8,11,14,15,18,21,22,29,30 (

इकाई-3 सुमित्रानन्दन पंत का काव्य (4 घंटे)

* सुमित्रानन्दन पंत :जीवन दर्शन ,सौन्दर्य- दृष्टि,काव्यगत विकास
* सुमित्रानन्दन पंत का काव्य :रहस्यवाद,काव्य-भाषा
* सुमित्रानन्दन पंत की कविता का पाठ-विश्लेषण) : 'प्रथम रश्मि', 'जग के उर्वर आँगन में', 'ताज', 'स्त्री', 'बापू के प्रति', 'ग्राम देवता')

इकाई-4 जयशंकर प्रसाद का काव्य (4 घंटे)

*कामायनी :सौन्दर्य-सौष्ठव ,सामरस्य सिद्धान्त, भाव-पक्ष,कला-पक्ष ,प्रासंगिकता
*जयशंकर प्रसाद की कविता का पाठ-विश्लेषण : कामायनी) श्रद्धा सर्ग(

इकाई-5 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का काव्य (4 घंटे)

*मुक्त छन्द 'और निराला
*निराला का काव्य :प्रकृति चित्रण ,वंचितों का संसार ,जागरण का स्वर

*सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की कविता का पाठ-विश्लेषण) : 'सरोज स्मृति', 'बांधों न नाव इस ठांव बंधु', 'तुम और मैं,' 'तोड़ती पत्थर ')

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

1. महादेवी वर्मा संधिरेखा,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद- 211001

2. जयशंकर प्रसाद कामायनी,राजकमल पेपर बैक्स ,राजकमल प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली- 110002
3. सुमित्रानन्दन पंत सुमित्रानन्दन पंत ग्रंथावली,भाग- 1 ,राजकमल प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली-110002
4. नंदकिशोर नवल)सम्पादन (निराला रचनावली-2 ,राजकमल प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली-110002

संदर्भ ग्रन्थ :

5. डॉ .नामवर सिंह छायावाद, राजकमल प्रकाशन,दरियागंज,नई दिल्ली-110002
6. डॉ .नगेन्द्र सुमित्रानन्दन पंत ,मयूर पेपरबैक्स,नोएडा-201301
7. गणपति चन्द्र गुप्त महादेवी नया मूल्यांकन ,लोक भारती प्रकाशन ,पहली मंजिल,दरबारी बिल्डिंग ,इलाहाबाद- 211 001
8. डॉ .ए .अरविन्दाक्षन) संपादन (निराला एक पुनर्मूल्यांकन ,आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,पंचकूला- 134 113
9. विनोद शाही जयशंकर प्रसाद : एक पुनर्मूल्यांकन,आधार प्रकाशन,प्रा.लि.,पंचकूला,हरियाणा-134113
10. नन्द दुलारे वाजपेयी कवि सुमित्रानंदन पन्त ,लोक भारती प्रकाशन ,पहली मंजिल,दरबारी बिल्डिंग, इलाहाबाद -211 001

पाठ्यक्रम बोध रचना (खड़ी बोली का काव्य : प्रकृति काव्य HIL 404(–

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	3	2	3	2		2	3	2
CO2	2	3	1	-		1	1	3
CO3	1	3	2	3		2	1	3
CO4	2	1	-	1		1	3	1
CO5	1	2	1	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **430**
पाठ्यक्रम का नाम : **साहित्य सिद्धांत : प्राचीन**
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. साएमा बानो / डॉ. चंद्रकांत सिंह
श्रेयांक : **2**

श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को भारतीय काव्य-शास्त्र के अभिज्ञान के प्रति प्रेरित करना |
* भारतीय काव्यशास्त्र के हेतु और प्रयोजन के प्रति कूतूहल पैदा करना |
* भारतीय सौन्दर्य-दृष्टि एवं ज्ञान-चेतना का संवर्धन |
* काव्यशास्त्र के विविध घटकों एवं तत्वों से परिचय कराना |
* काव्यशास्त्र के विविध संप्रदाय से परिचय कराना |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. भारतीय ज्ञान-परम्परा का बोध |
2. संस्कृत साहित्य की साहित्यिक अंतर्दृष्टि से परिचय |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. भारतीय मनीषा के विविध आयामों का ज्ञान |
5. सृजन के साथ आलोचना का गंभीर ज्ञान |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%

*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई- 1 साहित्य सिद्धांत: अर्थ और स्वरूप

- साहित्य का अर्थ एवं स्वरूप
- साहित्य सिद्धांत का महत्त्व

इकई - 2 प्राचीन साहित्य सिद्धांत - 1

- काव्य लक्षण
- काव्य हेतु
- काव्य प्रयोजन

इकाई -3 प्राचीन साहित्य सिद्धांत - 2

- रस का स्वरूप
- रस के विभेद
- रस निष्पत्ति

इकाई - 4 प्राचीन साहित्य सिद्धांत - 3

- ध्वनि का स्वरूप
- ध्वनि के प्रमुख भेद
- अलंकार का स्वरूप
- अलंकार के प्रमुख भेद

इकाई- 5 प्राचीन साहित्य सिद्धांत - 4

- रीति सिद्धांत
- वक्रोक्ति सिद्धांत
- औचित्य सिद्धांत

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. रस मीमांसा :आचार्य राम चन्द्र शुक्ल
2. संस्कृत आलोचना :बलदेव उपाध्याय
3. काव्यशास्त्र की भूमिका :डॉ.नगेन्द्र

4. काव्यशास्त्र :भागीरथ मिश्र
5. भारतीय काव्य विमर्श :राममूर्ति त्रिपाठी
6. भारतीय काव्यशास्त्र :गणेश त्रयम्बक देशपांडे
7. भारतीय काव्यशास्त्र के नए क्षितिज :राममूर्ति त्रिपाठी
8. भारतीय काव्यशास्त्र :डॉ.तारक नाथ बाली
9. भारतीय काव्यशास्त्र :डॉ .विश्वनाथ उपाध्याय

पाठ्यक्रम बोध रचना (साहित्य सिद्धांत : प्राचीन HIL **430)** –

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	1	2	2		1	1	2
CO2	2	2	3	-		3	2	3
CO3	1	3	1	2		1	1	3
CO4	2	1	-	1		3	3	1
CO5	2	3	1	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **417**
पाठ्यक्रम का नाम : नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक,नाट्य रूपांतर
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह / डॉ. प्रीति सिंह
श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* संस्कृत नाट्य परम्परा के प्रति विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना |

* हिंदी नाट्य परम्परा के प्रति विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना |
* प्रतिनिधि नाटककारों की रचनाओं का पाठ |
* हिंदी की नाट्य कृतियों पर आलोचकों की व्याख्या से परिचय |
* छात्रों के भीतर ऐतिहासिक-बोध का विकास करना |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. हिंदी के प्रतिनिधि नाटकों से परिचय |
2. नाटकों के साहित्यिक एवं कलागत प्रदेय से परिचय |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. ध्वनि, रंग, प्रकाश व्यवस्था, पटकथा आदि की समझ का विकास |
5. प्रतिनिधि नाट्य-कृतियों के व्याख्या-कौशल में अभिवृद्धि |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 नाट्य परम्परा : परिचय एवं क्रमिक विकास (8 घंटे)

1(नाटक :परिभाषा एवं प्रमुख तत्व ,नाटक और रंगमच

2) संस्कृत नाटकों की परम्परा
3) हिन्दी नाटकों की परम्परा का विकास
4) लोक नाट्य परम्परा का विकास
5) व्यावसायिक नाटक मंडलियाँ

इकाई-2 भारतेंदु युगीन नाट्य परम्परा (8 घंटे)

1) भारतेंदुयुगीन सामाजिक परिस्थितियाँ
2) भारतेंदु के प्रमुख प्रहसन
3) अन्धेर नगरी की भाषा एवं नाट्य-शिल्प का अध्ययन
4) समकालीन दौर में 'अन्धेर नगरी 'का महत्व
5) अन्धेर नगरी :समीक्षा एवं पाठ विवेचन

इकाई-3 प्रसाद युगीन नाट्य परम्परा (8 घंटे)

1) प्रसाद के नाटक और अभिनेयता
2) जयशंकर प्रसाद की नाट्य-चेतना
3) प्रसाद के समसामयिक नाट्यकार
4) 'स्कन्दगुप्त 'की ऐतिहासिकता ,संवाद-शैली ,गीत-योजना
5) 'स्कन्दगुप्त': समीक्षा एवं पाठ विवेचन

इकाई-4 प्रसादोत्तर नाट्य परम्परा (8 घंटे)

1) हिन्दी नाट्य-परम्परा में मोहन राकेश का योगदान
2) 'लहरों के राजहंस ': ऐतिहासिकता और आधुनिकता का द्वन्द्व ,समीक्षा एवं पाठ विवेचन
3) हानूश :व्यक्ति और सत्ता का द्वंद्व,हानूश : समीक्षा एवं पाठ विवेचन
4) जगदीश चन्द्र माथुर की नाट्य चेतना ,कोणार्क में रोमानियत एवं प्रगतिशीलता का द्वंद्व
5) कोणार्क :समीक्षा एवं पाठ-विवेचन

इकाई-5 समकालीन हिन्दी नाटक : परिप्रेक्ष्य एवं संभावनाएं (8 घंटे)

1) समकालीन हिन्दी नाटक :प्रमुख चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ
2) पश्चिमी नाटकों का प्रदर्शन
3) नुक्कड़ नाटक का स्वरूप
4) रंगमंच :दलित पात्र ,स्त्री छवियाँ
5) बाल रंगमंच :स्थिति और संभावनाएं

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

11. ओम प्रकाश सिंह)सम्पादन (भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ग्रंथावली भाग-1,प्रकाशन संस्थान,दरिया गंज नई दिल्ली -110002
12. जयशंकर प्रसाद प्रसाद के सम्पूर्ण नाटक एवं एकांकी,नार्थ इण्डिया पब्लिशर्स , सोनिया विहार,दिल्ली -110094

13. भीष्म साहनी हानूश,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002
14. मोहन राकेश लहरों के राजहंस,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002
15. जगदीश चन्द्र माथुर कोणार्क ,राधाकृष्ण प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

संदर्भ ग्रन्थ :

16. डॉ .धीरेन्द्र शुक्ल) सम्पादन (हिन्दी नाट्य परिदृश्य,प्रकाशन संस्थान,नई दिल्ली -110002
17. बच्चन सिंह हिन्दी नाटक ,राधाकृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,आवृत्ति: 2011
18. गिरीश रस्तोगी भारतेन्दु और अँधेर नगरी,अभिव्यक्ति प्रकाशन,विश्वविद्यालयमार्ग,इलाहाबाद -211004
19. रेवती रमण प्रसाद और स्कन्द्गुप्त ,अभिव्यक्ति प्रकाशन,विश्वविद्यालय मार्ग,इलाहाबाद- 211004
20. गिरीश रस्तोगी हिन्दी नाटक और रंगमच : नयी दिशाएँ ,नये प्रश्न , अभिव्यक्ति प्रकाशन,विश्वविद्यालय मार्ग,इलाहाबाद -211004
21. कृष्णानंद तिवारी नाटककार मोहन राकेश,प्रिय साहित्य सदन,दिल्ली -110094
22. नेमिचंद्र जैन रंग दर्शन,राधा कृष्ण प्रकाशन,दिल्ली,तीसरी आवृत्ति : 2010

पाठ्यक्रम बोध रचना (नाटक और रंगमंच : हिन्दी नाटक,नाट्य रूपांतर HIL 417) –

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	3	2	3		1	3	1
CO2	2	1	3	-		3	2	3
CO3	1	3	1	2		1	1	2
CO4	2	1	-	1		3	2	1
CO5	1	3	1	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम का नाम : पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह
श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को पश्चिमी काव्य-शास्त्र के कूतूहल हेतु प्रोत्साहित करना |
* पाश्चात्य ज्ञान-परम्परा के उद्भव और विकास का अध्ययन |
* पश्चिम केन्द्रित विभिन्न सिद्धांतों की आलोचकीय व्याख्या |
* भारतीय-चिन्तन एवं पश्चिमी-चिन्तन का तुलनात्मक अध्ययन |
* तात्कालिक सन्दर्भों के साथ प्रचलित सिद्धांतों की व्याख्या |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. विद्यार्थियों का पश्चिमी सिद्धांतों एवं आलोचकों से परिचय |
2. पश्चिम की साहित्यिक-परम्परा का अभिज्ञान |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. भाषा एवं साहित्य की आस्वादन क्षमता में अभिवृद्धि |
5. वैज्ञानिक निकषों के आधार पर साहित्य को जाँचने की क्षमता का विकास |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%

* कक्षा परीक्षा - 5%

*कक्षा-प्रस्तुतियां 5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई -1पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत: एक परिचय

- पश्चिम में साहित्य की अवधारणा और स्वरूप
- पाश्चात्य साहित्य चिंतन परम्परा का ऐतिहासिक विकास

इकई -2 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत -1

- प्लेटो -प्रत्यय सिद्धांत,अनुकृति ,काव्य पर आरोप
- अरस्तु -अनुकृति ,विरेचन सिद्धांत
- लोंजाइनस -काव्य में उदात्त की अवधारणा

इकाई-3 पाश्चात्यसाहित्य सिद्धांत -2

- वर्ड्सवर्थ -काव्य भाषा सिद्धांत
- कोलरिज -कल्पना सिद्धांत
- क्रोचे -अभिव्यंजनावाद

इकाई- 4 पाश्चात्यसाहित्य सिद्धांत -3

- टी.एस.एलियट -परंपरा और वैयक्तिक प्रतिभा ,निर्वैयक्तिकता
- आई.ए.रिचर्ड्स - मूल्य सिद्धांत ,सम्प्रेषण सिद्धांत

इकाई- 5 पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत -4

- शास्त्रीयतावाद ,स्वच्छन्दतावाद, मार्क्सवाद,
- नई समीक्षा ,संरचनावाद ,उत्तर संरचनावाद, विखंडनवाद,
- साहित्यिक शैली विज्ञान,उत्तर आधुनिकताइत्यादि

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. पाश्चात्य काव्यशास्त्र :देवेन्द्र नाथ शर्मा
2. पाश्चात्यसाहित्य चिंतन :निर्मला जैन
3. संरचनावाद,उत्तर संरचनावाद और प्राच्य काव्य शास्त्र : गोपी चंद नारंग
4. पाश्चात्य काव्यशास्त्र का इतिहास :डॉ .तारखनाथ बाली
5. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा :डॉ.रामचंद्र तिवारी

6. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत :डॉ.गणपति चन्द्र गुप्त
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र -इतिहास ,सिद्धांत और वाद : डॉ,भागीरथ मिश्र
8. पाश्चात्य काव्यशास्त्र -अधुनातन सन्दर्भ : सत्यदेव मिश्र

पाठ्यक्रम बोध रचना (पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत HIL 442) –

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	3	2	3		1	3	1
CO2	2	1	3	-		3	2	3
CO3	1	3	1	2		1	1	2
CO4	2	1	-	1		3	2	1
CO5	1	3	1	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **422**
पाठ्यक्रम का नाम : लोक साहित्य
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. प्रिया शर्मा
श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को लोक साहित्य से परिचित कराना |
* लोक एवं संस्कृति के विकास से अवगत कराना |
* लोक साहित्य की विविध विधाओं की व्याख्या |
* भारतीय लोक नाट्य परम्पराओं का अध्ययन |
* लोक साहित्य के विविध परम्पराओं एवं प्रवृत्तियों का उद्घाटन |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. भारतीय लोकधारा का ज्ञान |
2. लोक संस्कृति का बोध |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. लोक के विविध रूपों से परिचय |
5. ग्रामीण मुहावरों एवं कहावतों का परिज्ञान |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%	
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%	
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%	
*पुस्तकालय कार्य -	5%	
*प्रायोगिक कार्य -		5%
*गृह-कार्य -	5%	
* कक्षा परीक्षा -		5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां		5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 लोक साहित्य और उसका विकास **(8 घंटे)**

1) लोक साहित्य :अभिप्राय एवं परिभाषा
2) लोक साहित्य के विभिन्न रूप
3) लोक साहित्य :परम्परा और प्रयोग
4) लोक साहित्य और हिंदी साहित्य का अन्तः संबंध
5) हिंदी साहित्य के विकास में लोक साहित्य का योगदान

इकाई-2 आदिकालीन लोक साहित्य **(8 घंटे)**

1) आदिकालीन लोक साहित्य : एक परिचय
2) आदिकाल में लोक साहित्य :प्रमुख कवि
3) आदिकाल में लोक साहित्य की विशेषताएं
4) पाठ विवेचन :अमीर ख़ुसरो के लोक गीत (काहे को ब्याहे बिदेस ,बन बोलन लागे मोर ,छाप तिलक सब छीनी ,सावन आया ,मोरे पिया घर आए)

इकाई-3 लोक साहित्य : महत्त्व और विशेषताएँ **(8 घंटे)**

1) लोक साहित्य और लोक संस्कृति
2) लोक साहित्य और सामाजिक चेतना
3) पाठ विवेचन :आद्या प्रसाद उन्मत्त) अवधी लोक गीत' पाती')

इकाई-4 लोक साहित्य की विभिन्न विधाएँ **(8 घंटे)**

1) लोक गीत और ग्राम गीत
2) लोक से सम्बंधित ऋतु गीत
3) लोक से सम्बंधित संस्कार गीत
4) लोक से सम्बंधित देवी-देवताओं के गीत
5) लोक से सम्बंधित श्रम-गीत

इकाई-5 लोक नाट्य और लोक सुभाषित **(8 घंटे)**

1) लोक नाट्य :एक परिचय
2) नौटंकी :एक परिचय
3) लोक सुभाषित :एक परिचय
4) लोक से सम्बंधित लोकोक्ति

संभावित ग्रन्थ –

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. लोक साहित्य की भूमिका : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
2. भारत में लोक साहित्य : कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन, इलाहाबाद
3. भारत की लोक कथाएँ : सं. ए. के. रामानुजन, नॅशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली
4. खड़ी बोली का लोक साहित्य : डॉ. सव्यरानी, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद
5. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र, अपोलो प्रकाशन, जयपुर
6. लोक धारा : हीरामणि सिंह 'साथी', अनंग प्रकाशन, दिल्ली
7. जनपदीय भाषा साहित्य(अवधी काव्य): डॉ.सूर्य प्रसाद दीक्षित (सं.),प्रकाशन केन्द्र, लखनऊ
8. भारतीय लोक-साहित्य _ श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
9. लोक साहित्य और संस्कृति _ डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. लोक साहित्य : एक निरूपण _ रामचंद्र बोड़ा, एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर
11. लोक साहित्य के प्रतिमान _ डॉ. कुंदनलाल उप्रेती, भारत प्रकाशन मंदिर, अलीगढ़
12. आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति - डॉ. राम रतन प्रसाद, अनंग प्रकाशन,दिल्ली
13. लोक काव्य के क्षितिज _ डॉ. हरिसिंह पाल, अनंग प्रकाशन, दिल्ली

पाठ्यक्रम बोध रचना (लोक साहित्य HIL 422) –

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम

						1	2	3
CO1	2	3	1	3		1	3	2
CO2	1	1	3	-		1	2	3
CO3	1	3	2	2		2	1	2
CO4	3	1	-	1		1	3	1
CO5	2	1	2	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **503**

पाठ्यक्रम का नाम : विमर्श विश्लेषण

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह / डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति

श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को हाशिए के साहित्य से परिचित कराना |
* सौन्दर्य की नयी व्याख्या से परिचय |
* पीड़ा, वेदना एवं द्वंद्व से परिचय |
* दलित साहित्य, स्त्री साहित्य,आदिवासी साहित्य एवं थर्ड जेंडर की आलोचनात्मक व्याख्या |
* स्वानुभूति,सहानुभूति एवं समानुभूति का परिज्ञान |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. हाशिए के जीवन का बोध |
2. नई सौन्दर्य-दृष्टि से परिचय |
3. आलोचकीय प्रखरता का विकास |
4. भाषा और साहित्य में छिपे तनाव का परिज्ञान |
5. जीवन के खुरदरेपन एवं यथार्थ का बोध |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%	
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%	
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%	
*पुस्तकालय कार्य -	5%	
*प्रायोगिक कार्य -		5%
*गृह-कार्य -	5%	
* कक्षा परीक्षा -		5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां		5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु -

इकाई-1 विमर्श की अवधारणा (8 घंटे)

1) विमर्श का अर्थ एवं स्वरूप
2) विमर्श को लेकर विभिन्न विद्वानों के मत
3) साहित्य में विमर्श
4) समकालीन सन्दर्भ में विमर्श की प्रासंगिकता

इकाई-2 दलित विमर्श (8 घंटे)

1) दलित विमर्श :अर्थ एवं स्वरूप
2) कविता में दलित विमर्श
3) कथा साहित्य में दलित विमर्श
4) नाटक में दलित विमर्श
5) आत्मकथा में दलित विमर्श
6) विशेष साहित्यकार का अध्ययन -तुलसी राम) आत्मकथा -मुर्दहिया(, ओमप्रकाश वाल्मीकि)कहानी संग्रह - सलाम(

इकाई-3 स्त्री विमर्श (8 घंटे)

1) स्त्री विमर्श की अवधारणा
2) हिन्दी कविता में स्त्री की उपस्थिति
3) कथा साहित्य में महिला लेखन
4) आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता की पड़ताल

5) विशेष साहित्यकार का अध्ययन -मैत्रेयी पुष्पा) अल्मा कबूतरी(

इकाई-4 आदिवासी विमर्श (8 घंटे)

1) आदिवासी विमर्श की अवधारणा
2) आदिवासी लोक एवं संस्कृति
3) हिन्दी कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
4) समकालीन हिन्दी कविता में आदिवासी विमर्श
5) विशेष साहित्यकार का अध्ययन :महादेव टोप्पो) कविता संग्रह - जंगल पहाड़ के पाठ(राजीव रंजन प्रसाद)उपन्यास - आमचो बस्तर(, रणेंद्र)उपन्यास -ग्लोबल गाँव के देवता (

इकाई-5 तृतीय लिंगी विमर्श (थर्ड जेंडर) (8 घंटे)

6) तृतीय लिंगी विमर्श की अवधारणा
7) कथा साहित्य में तृतीय लिंगी विमर्श
8) हिन्दी सिनेमा में तृतीय लिंगी विमर्श
9) आत्मकथा में तृतीय लिंगी विमर्श
10) समकालीन सन्दर्भ में तृतीय लिंगी समाज की समस्याएं एवं चुनौतियाँ
11) विशेष साहित्यकार का अध्ययन :महेंद्र भीष्म) उपन्यास - किन्नर कथा(, विजेंद्र प्रताप सिंह)संपादित कहानियाँ (कथा और किन्नर

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

तुलसी राम	मुर्दहिया
ओमप्रकाश वाल्मीकि	सलाम
मैत्रेयी पुष्पा	अल्मा कबूतरी ,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2000
महादेव टोप्पो	जंगल पहाड़ के पाठ ,अनुज्ञा बुक्स ,दिल्ली
राजीव रंजन प्रसाद	आमचो बस्तर
रणेंद्र	ग्लोबल गाँव के देवता
महेंद्र भीष्म	किन्नर कथा ,सामयिक प्रकाशन,दिल्ली
विजेंद्र प्रताप सिंह)	संपादित कहानियाँ (कथा और किन्नर

संदर्भ ग्रन्थ :

1.डॉ. अर्जुन चव्हाण	विमर्श के विविध आयाम,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली
2.प्रो. श्रीराम शर्मा (संपादन)	समकालीन हिन्दी साहित्य विविध विमर्श
	वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली

3.कँवल भारती दलित कविता का संघर्ष, अमन प्रकाशन
कानपुर नगर - 208012 उ.प्र.

4. डॉ .संजय नवले हिन्दी दलित आत्मकथा ,अमन प्रकाशन
कानपुर नगर - 208012 उ.प्र .

5. सुमन राजे इतिहास में स्त्री ,भारतीय ज्ञानपीठ,18,इन्स्टीट्यूशनल एरिया
लोदी रोड,नई दिल्ली-110032

6. क्षमा शर्मा स्त्रीत्ववादी विमर्श ,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली- 110032

7. जगदीश्वर चतुर्वेदी स्त्री साहित्य विमर्श ,अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स,दिल्ली

8. विजेंद्र प्रताप सिंह)सम्पादन (वंचित संवेदना का साहित्य खंड-3
आकांक्षा पब्लिशिंग हाउस,नई दिल्ली

9. योगेश अटल आदिवासी भारत,रावत पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली

10. रमणिका गुप्ता)सम्पादन (आदिवासी लोक ,शिल्पायन प्रकाशन,दिल्ली 110032

11. डॉ .राम रतन प्रसाद आदिवासी लोकगीतों की संस्कृति ,अनंग प्रकाशन,दिल्ली

12. विजेंद्र प्रताप सिंह)सम्पादन (विमर्श का तीसरा पक्ष)थर्ड जेंडर(, अनंग प्रकाशन दिल्ली

पाठ्यक्रम बोध रचना)विमर्श विश्लेषण HIL 503(–

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	2	1	3		2	3	2
CO2	2	1	1	-		1	2	3
CO3	1	3	2	1		3	1	3
CO4	3	2	-	1		1	3	1
CO5	1	1	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL 447
पाठ्यक्रम का नाम : रीति काव्य
पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह
श्रेयांक : **2**

श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को हिंदी की रीतिकालीन काव्यधारा से परिचित कराना |
* रीतिकालीन सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को उजागर करना |
* रीतिकालीन सौन्दर्य-चेतना के अध्ययन पर बल |
* रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रदेय से अवगत कराना |
* काव्यशास्त्र के परिप्रेक्ष्य में रीतिकाल की व्याख्या |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. भारतीय रीति-परम्परा का ज्ञान |
2. हिंदी की रीतिकालीन कविता का बोध |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. सौन्दर्य एवं प्रणय के सूक्ष्म तत्वों का ज्ञान |
5. आलोचकीय प्रखरता का विस्तार |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

इकाई-1 रीतिकालीन हिन्दी काव्य : नामकरण एवं स्थितियाँ **(4 घंटे)**

1) रीति का अर्थ एवं स्वरूप,रीति सम्प्रदाय
2) रीतिकालीन हिंदी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ
3) हिंदी रीति काव्य के नामकरण का आधार
4) रीतिकालीन परिस्थितियाँ :सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक

इकाई-2 रीति-पूर्व हिन्दी रीति काव्य (4 घंटे)

1) भक्तिकालीन प्रमुख रीति कवि
2) रहीम का रचना संसार एवं युगीन सन्दर्भ

इकाई-3 रीति काव्य-परम्परा : 1 (4 घंटे)

1) रीतिबद्ध कविता :प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
2) भूषण का काव्य :राष्ट्रीयता ,काव्यानुभूति,काव्य भाषा
3) पाठ विवेचन):'शिवा बावनी', सन्दर्भ -भूषण-ग्रन्थावली (

इकाई-4 रीति काव्य-परम्परा : 2 (4 घंटे)

1) रीति सिद्ध कविता :प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
2) बिहारी का रचना-संसार,बिहारी की समाहार शक्ति
3) पाठ विवेचन) :सन्दर्भ - बिहारी-रत्नाकर,दोहा संख्या -1,13,18,20,21,34,35 38,52,57, 60,73,75,80,121,140,141,154,159(

इकाई-5 रीति काव्य-परम्परा: 3 (4 घंटे)

1) रीतिमुक्त कविता :प्रमुख कवि एवं रचनाएँ
2) घनानन्द का रचना-संसार ,घनानंद की विरहानुभूति
3) पाठ विवेचन)सन्दर्भ - घनानन्द-कवित्त ,कवित्त संख्या 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12, (

सम्भावित ग्रन्थ :

आधार ग्रन्थ :

1. डॉ .सत्य प्रकाश मिश्र) सम्पादन (रहीम रचनावली', लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,द्वितीय संस्करण: 2002
2. डॉ .विजयपाल सिंह भूषण-ग्रन्थावली',जय भारती प्रकाशन,इलाहाबाद . संस्करण 2007
3. सुधाकर पाण्डेय)संपादन('रसलीन-ग्रन्थावली',नागरीप्रचारिणी सभा,काशी
4. जगन्नाथ दास रत्नाकर)संपादन(बिहारी-रत्नाकर

5. भगीरथ मिश्र हिन्दी रीति साहित्य)घनानन्द (,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

संदर्भ ग्रन्थ :

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास, प्रकाशन संस्थान ,अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली -110 002
2. डॉ .बच्चन सिंह हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,राधाकृष्ण प्रकाशन , अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली -110 002
3. डॉ .नगेन्द्र रीतिकाव्य की भूमिका,नेशनल पब्लिशिंग हाउस , अंसारी रोड,दरियागंज, नई दिल्ली -110 002
4. भवदेव पाण्डेय आलम ,साहित्य अकादेमी,रवीन्द्र भवन,फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 002
5. सत्यदेव त्रिपाठी मध्यकालीन कविता के सामाजिक सरोकार , शिल्पायन,शाहदरा,दिल्ली-110032

पाठ्यक्रम बोध रचना)विमर्श विश्लेषण HIL 503(–

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	1	3	3		1	3	2
CO2	1	1	1	-		1	2	3
CO3	3	1	2	1		2	1	3
CO4	1	1	-	3		3	2	1
CO5	1	2	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL 441

पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी साहित्य का इतिहास : आधुनिक काल

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. प्रीति सिंह

श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य

कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को इतिहास-लेखन से अवगत कराना |
* विद्यार्थियों के भीतर साहित्य के आधुनिक काल की ललक पैदा कराना |
* आधुनिक काल की विविध विधाओं के प्रति जानकारी प्रदान करना |
* हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की विविध धाराओं की व्याख्या |
* प्रतिनिधि रचनाओं की व्याख्या एवं विश्लेषण |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. हिंदी साहित्य के आधुनिक काल की व्यापक समझ |
2. भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद का अभिज्ञान |
3. पाठकीय दक्षता एवं आलोचकीय क्षमता का विकास |
4. प्रतिनिधि रचनाओं की व्याख्या में दक्षता |
5. रागात्मिका शक्ति का विकास |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%	
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%	
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%	
*पुस्तकालय कार्य -	5%	
*प्रायोगिक कार्य -		5%
*गृह-कार्य -	5%	
* कक्षा परीक्षा -		5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां		5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई -1 आधुनिककाल

- आधुनिकता का अर्थ और स्वरूप
- आधुनिककाल की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

- हिन्दी नवजागरण

इकाई - 2 भारतेंदु युग तथा द्विवेदी युग

- भारतेंदु युगीन पद्य साहित्य की प्रवृत्तियाँ
- भारतेंदु युगीन गद्य साहित्य की प्रवृत्तियाँ
- द्विवेदी युगीन पद्य साहित्य की प्रवृत्तियाँ
- द्विवेदी युगीन गद्य साहित्य की प्रवृत्तियाँ

इकाई -3 छायावाद

- छायावाद की प्रमुख प्रवृत्तियां
- प्रमुख छायावादी रचनाकार
- छायावाद का योगदान

इकाई - 4 प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता

- प्रगतिवाद :प्रमुख प्रवृत्तियां एवं रचनाकार
- प्रयोगवाद :प्रमुख प्रवृत्तियां एवं रचनाकार
- नई कविता :प्रमुख प्रवृत्तियां एवं रचनाकार

इकाई - 5 समकालीन साहित्य

- समकालीनता की अवधारणा
- समकालीन हिंदी कविता
- समकालीन हिंदी गद्य साहित्य
- गीत ,नवगीत और ग़ज़ल
- समकालीन पत्र-पत्रिकाएँ

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1.हिन्दी साहित्य का इतिहास : रामचंद्र शुक्ल

2.हिन्दी साहित्य का इतिहास : सं. डॉ.नगेन्द्र

3.हिन्दी साहित्य का आदिकाल : हजारी प्रसाद द्विवेदी

4. हिन्दी साहित्य :उद्भव और विकास : हजारी प्रसाद द्विवेदी

5. हिन्दी साहित्य की भूमिका :हजारी प्रसाद द्विवेदी

6. साहित्य और इतिहास दृष्टि :मैनेजर पाण्डेय

7. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण :रामविलास शर्मा

8. हिन्दी साहित्य का अतीत :विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

9. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास ;बच्चन सिंह

10. हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास :डॉ.भागीरथ मिश्र

11. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास :नन्द दुलारे वाजपेई

12. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास :बच्चन सिंह

13. हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास :राम कुमार वर्मा

पाठ्यक्रम बोध रचना)विमर्श विश्लेषण HIL 441(–

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	2	1	3	3		2	3	2
CO2	1	2	1	-		1	2	1
CO3	3	1	2	1		2	1	3
CO4	1	3	-	3		3	1	2
CO5	3	2	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL 444

पाठ्यक्रम का नाम : स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह

श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* भारतीय स्वतंत्रता के लक्ष्यों एवं आदर्शों से विद्यार्थियों को परिचित कराना |
* स्वतंत्रता के बाद हिंदी कविता में आए परिवर्तनों को रेखांकित करना |
* स्वतंत्रता के बाद की हिंदी कविता के प्रदेय को रेखांकित करना |
* प्रतिनिधि रचनाकारों की रचनाशीलता पर प्रकाश डालना |
* प्रतिनिधि रचनाओं की व्याख्या एवं विश्लेषण |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता की व्यापक समझ का विकास |
2. प्रगतिवाद, प्रयोगवाद एवं समकालीन हिंदी काव्य के सौन्दर्य-बोध का ज्ञान |
3. अध्ययन-मनन की गंभीर क्षमता का विकास |
4. प्रतिनिधि रचनाओं की व्याख्या एवं आलोचाना में निपुणता |
5. रागात्मिका शक्ति का विकास |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%	
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%	
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%	
*पुस्तकालय कार्य -	5%	
*प्रायोगिक कार्य -		5%
*गृह-कार्य -	5%	
* कक्षा परीक्षा -		5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां		5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य : स्वरूप एवं प्रवृत्तियाँ (8 घंटे)

1) स्वातंत्र्योत्त**र** काव्य :राजनीतिक,सामाजिक स्थिति
2) प्रगतिवादी काव्यधारा
3) प्रयोगवादी काव्यधारा
4) नई कविता
5) समकालीन हिन्दी कविता

इकाई-2 प्रयोगवादी कविता : कवि एवं रचना-संसार (8 घंटे)

1) अज्ञेय का काव्यगत विकास, अज्ञेय की काव्य-दृष्टि, अज्ञेय और प्रकृति
2) मुक्तिबोध के काव्य में अस्तित्ववाद,मार्क्सवाद का प्रभाव,मुक्तिबोध की सौन्दर्यानुभूति

3) अज्ञेय की कविताओं का पाठ

4) मुक्तिबोध की कविताओं का पाठ

इकाई-3 नई कविता : कवि एवं रचना-संसार (8 घंटे)

1) मुक्तिबोध और नई कविता,शमशेर बहादुर सिंह की कविता में प्रेम
2) भवानी प्रसाद मिश्र का काव्यगत विकास ,प्रेम एवं प्रकृति
3) रघुवीर सहाय की कविता में राजनीति एवं समाज
4) शमशेर बहादुर सिंह की कविताओं का पाठ
5) भवानी प्रसाद मिश्र की कविताओं का पाठ
6) रघुवीर सहाय की कविताओं का पाठ

इकाई-4 समकालीन कविता : कवि एवं रचना संसार (8 घंटे)

1) त्रिलोचन :काव्यगत विकास, त्रिलोचन के सानेट
2) नागार्जुन :राजनीतिक चेतना, सामाजिक चेतना
3) त्रिलोचन की कविताओं का पाठ
4) नागार्जुन की कविताओं का पाठ

इकाई-5 समकालीन कविता : चुनौतियां एवं युगबोध (8 घंटे)

1) समकालीनता एवं सर्वकालिकता का प्रश्न
2) समकालीनता की अवधारणा
3) समकालीन कविता और सामाजिक यथार्थ
4) समकालीन हिन्दी कविता की चुनौतियाँ

<u>सम्भावित ग्रन्थ :</u>

<u>आधार ग्रन्थ :</u>

कृष्णदत्त पालीवाल — अज्ञेय रचनावली,खण्ड- 2

भारतीय ज्ञान पीठ ,18 इंस्टीटयूशनल एरिया,लोदी रोड ,
नई दिल्ली - 110 003

रघुवीर सहाय — एक समय था

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली -110 002

पहला संस्करण : 1995

धूमिल — कल सुनना मुझे

वाणी प्रकाशन ,21-ए,दरियागंज नई दिल्ली -110 002
आवृत्ति : 2010

शमशेर बहादुर सिंह — प्रतिनिधि कवितायें

राजकमल पेपरबैक्स,
राजकमल प्रकाशन प्रा .लि .
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली -110 002
पांचवी आवृत्ति : 2005

नागार्जुन — प्रतिनिधि कवितायें

राजकमल पेपरबैक्स,
राजकमल प्रकाशन प्रा .लि .
1-बी,नेताजी सुभाष मार्ग,नई दिल्ली -110 002

गोबिन्द प्रसाद (सम्पादन) — केदारनाथ सिंह पचास कविताएँ नयी सदी के लिए
वाणी प्रकाशन,4695,21-ए दरियागंज,नई दिल्ली-110002
प्रथम संस्करण : 2012

<u>सहायक ग्रन्थ :</u>

डॉ. अनंतकीर्ति तिवारी — रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा

विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 1996

डॉ. बृजबाला सिंह — मुक्तिबोध और उनकी कविता
विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001
संस्करण : 2004

डॉ. हरिनिवास पाण्डेय — प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन
विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक,
वाराणसी- 221 001

संस्करण : 2000

पाठ्यक्रम बोध रचना)स्वातंत्र्योत्तर हिंदी काव्य HIL 444(-

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	2	1	3	3		2	3	2
CO2	1	2	1	-		1	2	1
CO3	3	1	2	1		2	1	3
CO4	1	3	-	3		3	1	2
CO5	3	2	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **445**

पाठ्यक्रम का नाम : पटकथा लेखन (कथात्मक एवं गैर कथात्मक)

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह / डॉ. प्रिया शर्मा

श्रेयांक : **2**

श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* हिंदी के इतर दूसरे विभाग के विद्यार्थियों को पटकथा के प्रति रूचि विकसित करना |
* पटकथा लेखन की उपयोगिता को समझाना |
* पटकथा लेखन के माध्यम से आजीविका पर बल |
* रेडियो रूपक, दूरदर्शन पटकथा, सॉप ओपेरा, आदि के लेखन के प्रति रूचि विकसित करना |
* फीचर फिल्मों की पटकथा, संवाद लेखन एवं विज्ञापन लेखन की कला का विकास करना |

पाठ्यक्रम परिणाम (co) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. पटकथा लेखन में दक्षता |
2. रेडियो रूपक, दूरदर्शन पटकथा, सॉप ओपेरा, आदि के प्रति जानकारी होना |
3. रागात्मिका शक्ति का विकास |
4. सृजनात्मक कौशल में विस्तार |
5. साहित्य एवं सृजन की गंभीर समझ |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 पटकथा : अर्थ एवं स्वरूप **(4 घंटे)**

1) पटकथा परिभाषा एवं स्वरूप
2) पटकथा लेखन एवं समाज
3) पटकथा के लिए उपयुक्त कहानी का चयन
4) समकालीन परिदृश्य में पटकथा की भूमिका

इकाई-2 हिन्दी पटकथा के विभिन्न प्रकार- 1 **(4 घंटे)**

1) फीचर फिल्मों की पटकथा
2) डाक्यूमेंट्री एवं डाक्यूड्रामा
3) रेडियो पटकथा लेखन एवं दृष्टि
4) रेडियो नाटक लेखन एवं विभिन्न तत्व

5) रेडियो रूपक

इकाई-3 हिन्दी पटकथा के विभिन्न प्रकार- 2 **(4 घंटे)**

1) दूरदर्शन पटकथा
2) सोप ओपेरा की पटकथा
3) विज्ञापन फिल्मों की पटकथा
4) पटकथाकार के विभिन्न गुण
5) हिन्दी पटकथा में अर्थ व्यवस्था-नीति

इकाई-4 पटकथा के मूल घटक **(4 घंटे)**

1) वस्तु विन्यास
2) परिस्थिति परियोजना
3) पात्र परिकल्पना
4) संवाद कला

इकाई-5 पटकथा लेखन एवं भविष्यगत संभावनाएं **(4 घंटे)**

1) पटकथा लेखन और वर्तमान परिदृश्य
2) पटकथा लेखन में युवाओं की भूमिका
3) पटकथा लेखन में फिल्म एवं टी.वी के कथात्मक लेखन में अंतर
4) पटकथा लेखन में आने वाली मूलभूत समस्याएँ
5) समकालीन परिदृश्य में पटकथा लेखन की प्रासंगिकता

सम्भावित ग्रन्थ :

1. असगर वजाहत व्यावहारिक निर्देशिका पटकथा लेखन ,राजकमल प्रकाशन,प्रा.लि.नई दिल्ली-110 002
2. डॉ .चन्देश्वर यादव अनंग प्रकाशन,दिल्ली -110053
3. मनोहर श्याम जोशी पटकथा लेखन : एक परिचय ,राजकमल प्रकाशन,प्रा.लि.नई दिल्ली-110 002

पाठ्यक्रम बोध रचना -(**पटकथा लेखन: कथात्मक एवं गैर कथात्मक** HIL 445)

पाठ्यक्रम	कार्यक्रम	कार्यक्रम	कार्यक्रम	कार्यक्रम	सम्पूर्ण	कार्यक्रम	कार्यक्रम	कार्यक्रम

परिणाम	परिणाम 1	परिणाम 2	परिणाम 3	परिणाम 4		विशिष्ट परिणाम 1	विशिष्ट परिणाम 2	विशिष्ट परिणाम 3
CO1	3	2	3	1		1	2	3
CO2	1	3	1	-		1	2	1
CO3	3	1	2	1		3	2	1
CO4	1	1	-	2		2	1	1
CO5	2	1	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL **450**

पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी का लोकप्रिय साहित्य

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह / डॉ. प्रिया शर्मा/ डॉ. प्रीति सिंह

श्रेयांक : **2**

श्रेय तुल्यमान: 2 श्रेय (1 श्रेय

व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* हिंदी के इतर दूसरे विभाग के विद्यार्थियों को हिंदी के लोकप्रिय साहित्य से अवगत कराना |
* हिंदी के लोकप्रिय साहित्य की विकास परम्परा का ज्ञान |
* महत्वपूर्ण लोकप्रिय रचनाकारों की रचना-प्रक्रिया एवं रचनात्मकता का ज्ञान |
* प्रतिनिधि लोकप्रिय रचनाओं की व्याख्या एवं समीक्षा |
* हिंदी की लोकप्रिय विधाओं गीत, गजल, कहानी, उपन्यास आदि की समझ |

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. हिंदी के लोकप्रिय साहित्य से परिचय |
2. पाठकीय आस्वादकता का विकास |
3. संवेदनात्मकता का परिवर्धन |
4. सृजनात्मक लेखन में निपुणता |

5. आलोचकीय क्षमता का विकास |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%
*पुस्तकालय कार्य -	5%
*प्रायोगिक कार्य -	5%
*गृह-कार्य -	5%
* कक्षा परीक्षा -	5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां	5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु _

इकाई-1 लोकप्रिय साहित्य : अवधारणा एवं विकास (4 घंटे)

क) लोक का अर्थ एवं स्वरूप,शास्त्र एवं लोक में अंतर

ख) लोक साहित्य की अवधारणा,लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति

ग) हिन्दी के लोकप्रिय साहित्य का विकास

इकाई-2 हिन्दी का प्रारंभिक लोकप्रिय साहित्य (4 घंटे)

1) देवकीनंदन खत्री कृत चन्द्रकान्ता का आलोचनात्मक अध्ययन
)सन्दर्भ -पहला अध्याय (
2) गोपाल राम गहमरी की कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन
3) प्रेमचंद की कफन कहानी का आलोचनात्मक अध्ययन

इकाई-3 हिन्दी का उत्तरोत्तर लोकप्रिय कथा साहित्य (4 घंटे)

1) इब्ने सफी के उपन्यास का अध्ययन
2) वेदप्रकाश शर्मा के उपन्यास का अध्ययन
3) धर्मवीर भारती के उपन्यास का अध्ययन

इकाई-4 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय गीतकार एवं उनके गीत (3 घंटे)

4) हरिवंशराय 'बच्चन '

5) गोपाल सिंह 'नेपाली'

6) गोपालदास' नीरज '

इकाई-5 हिन्दी के प्रमुख लोकप्रिय ग़ज़लकार एवं उनकी ग़ज़लें (5 घंटे)

1) शमशेर बहादुर सिंह
2) दुष्यंत कुमार
3) गोपालदास 'नीरज'
4) कुँअर बेचैन

आधार ग्रन्थ :

1 .डा. विष्णु सक्सेना (संपादन) लोकप्रियता के शिखर गीत, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई-दिल्ली,पहला संस्करण: 2013

2. डॉ. सुरेश कुमार जैन (संपादन) काव्य कल्पद्रुम, वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002 संस्करण:2008,2009

3.रंजना अरगड़े (सम्पादन) सुकून की तलाश

4.दुष्यंत कुमार 'साये में धूप',

5.गोपालदास 'नीरज' 'नीरज की पाती'

6.कुँअर बेचैन शामयाने कांच के

सन्दर्भ ग्रन्थ :

7. डॉ.सी. वसंता गीतकार नीरज,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

8.डा. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी (संपादन) बीसवीं सदी का हिन्दी साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली

9. डॉ. नरेश हिन्दी ग़ज़ल : दशा और दिशा,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली-110002

पाठ्यक्रम बोध रचना (हिंदी का लोकप्रिय साहित्य HIL 450)-

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	1	2	3		2	1	1
CO2	2	1	1	-		1	2	3
CO3	3	1	2	3		3	2	1
CO4	1	2	-	2		2	2	2

CO5	2	1	3	-				5
CO6								

पाठ्यक्रम कूट संकेत : HIL 468

पाठ्यक्रम का नाम : हिंदी काव्य : प्राचीन से आधुनिक

पाठ्यक्रम शिक्षक : डॉ. चंद्रकांत सिंह

श्रेयांक : 4

श्रेय तुल्यमान: 4 श्रेय (1 श्रेय व्याख्यान,संगठित कक्षा गतिविधि और व्यक्तिगत संपर्क के 10 घंटे; प्रयोगशाला या / व्यावहारिक कार्य,ट्यूटोरियल,शिक्षक नियंत्रित गतिविधियों /कार्य के 5 घंटे;और अन्य कार्य जैसे स्वतन्त्र व्यक्तिपरक कार्य ,सामूहिक कार्य,निर्धारित अनिवार्य /वैकल्पिक कार्य,साहित्य समीक्षा,पुस्तकालय कार्य,तथ्य संग्रह,शोधपत्र लेखन,सेमिनार,प्रबंध लेखन,इत्यादि के 15 घंटे के समान है |

पाठ्यक्रम का उद्देश्य:

* विद्यार्थियों को हिंदी कविता की समृद्ध धारा से परिचित कराना |
* आदिकालीन प्रवृत्तियों कवियों का परिचय देते हुए विद्यापति के महत्व को उद्घाटित करना |
* भक्तिकाल के साहित्यिक प्रदेय पर बात करते हुए कबीर एवं तुलसी के रचना-संसार की व्याख्या |
* रीतिकालीन काव्य की व्याख्या करते हुए बिहारी एवं घनानंद की कविता का उद्घाटन |
* आधुनिक कविता की प्रवृत्तियों का उद्घाटन |
* निराला, प्रसाद, महादेवी एवं रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं की व्याख्या

पाठ्यक्रम परिणाम (CO) - इस पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद विद्यार्थियों में निम्नलिखित क्षमता का विकास होगा -

1. सम्पूर्ण हिंदी कविता का परिज्ञान |
2. हिंदी कविता के महत्वपूर्ण प्रस्थान-बिन्दुओं का अध्ययन |
3. हिंदी कविता के प्रतिनिधि कवियों की रचनाशीलता का बोध |
4. प्रतिनिधि रचनाओं की व्याख्या एवं आलोचना में निपुणता |
5. रागात्मिका शक्ति का विकास |
6. संवेदनात्मक क्षमता का परिवर्धन |

उपस्थिति अनिवार्यता: पूर्ण एवं सुनिश्चित लाभ हेतु विद्यार्थी का सभी कक्षाओं में भागीदार होना अनिवार्य है | न्यूनतम 75% कक्षाओं में उपस्थिति दर्ज ना होने पर विद्यार्थी को परीक्षा में बैठने से वंचित किया जा सकता है |

मूल्यांकन मापदंड :

क) मध्यावधि परीक्षा -	25%	
ख) सत्रांत परीक्षा -	50%	
ग) सतत आतंरिक मूल्यांकन -	25%	
*पुस्तकालय कार्य -	5%	
*प्रायोगिक कार्य -		5%
*गृह-कार्य -	5%	
* कक्षा परीक्षा -		5%
*कक्षा-प्रस्तुतियां		5%

पाठ्यक्रम विषयवस्तु –

इकाई-1 **(8 घंटे)**

4) विद्यापति :प्रकृति वर्णन ,भक्ति एवं श्रृंगार

5))पाठ विवेचन : सं रामवृक्ष बेनीपुरी ,'विद्यापति पदावली',वंदना :पद संख्या : 1,2 ,वयः संधि: पद संख्या 4,9,12, वसंत :पद संख्या 174,179)

इकाई-2 **(8घंटे)**

1) कबीर :सामाजिक चिंतन

2) कबीर :पाठ विवेचन] -कबीर ,हजारी प्रसाद द्विवेदी) सम्पादन -(पद संख्या :160,163, 169,170,173

3) तुलसी :समन्वय की भावना

4) पाठ विवेचन] -'उत्तरकाण्ड -'कलियुग वर्णन '(श्रीराम चरित मानस (

इकाई-3 **(8घंटे)**

(क) रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध एवं रीतिमुक्त काव्य

ख) बिहारी सतसई : श्रृंगार का काव्य

ग) बिहारी सतसई : पाठ विवेचन (बिहारी रत्नाकर दोहा संख्या 113 18 20 25

घ) घनानंद की बिरहानुभूति

इकाई-4 **(8 घंटे)**

1) हिंदी नवजागरण, छायावाद का साहित्यिक अवदान

2) जयशंकर प्रसाद :पाठ विवेचन कामायनी श्रद्धा सर्ग

3) सुमित्रानंदन पंत :सौंदर्य दृष्टि

4) पाठ विवेचन :'प्रथम रश्मि 'कविता

इकाई-5 **(8 घंटे)**

(1) निराला का काव्य :राष्ट्रीय जागरण का स्वर

(2) रामधारी सिंह दिनकर का भारत बोध

(3) रामधारी सिंह दिनकर :पाठ विवेचन उर्वशी तृतीय अंक

संभावित ग्रन्थ -

आधार ग्रन्थ :

1. विद्यापति -विद्यापति पदावली (सं सं नरेंद्र झा)
2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी)सं (कबीर
3. जायसी ग्रंथावली ,आचार्य रामचंद्र शुक्ल) सम्पादन(
4. तुलसीकृत श्रीराम चरित मानस
5. मीराबाई की पदावली',)सं विश्वनाथ त्रिपाठी(

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल- हिन्दी साहित्य का इतिहास,काशी नागरी प्रचारिणी सभा काशी,1969
2. डॉ बच्चन सिंह -हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास,राधाकृष्ण प्रकाशन,1996
3. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी - हिन्दी साहित्य का आदिकाल,पटना,1961
4. डॉ. शिवप्रसाद सिंह- विद्यापति, लोक भारती प्रकाशन,इलाहाबाद,1976
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह(सं)सं पृथ्वीराज रासो, साहित्य भवन प्रा.लि. इलाहाबाद
6. डॉ. वासुदेव सिंह (सम्पादन) - आदिकालीन काव्य, विश्व विद्यालय प्रकाशन,वाराणसी
7. सत्यदेव त्रिपाठी - मध्यकालीन कविता के सामाजिक सरोकार, शिल्पायन,शाहदरा,दिल्ली-110032
8. डॉ राधेश्याम दुबे - कबीर : कवि, साधक और समाज सुधार, किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी

पाठ्यक्रम बोध रचना - (हिंदी का काव्य : प्राचीन से आधुनिक HIL 468)-

पाठ्यक्रम परिणाम	कार्यक्रम परिणाम 1	कार्यक्रम परिणाम 2	कार्यक्रम परिणाम 3	कार्यक्रम परिणाम 4	सम्पूर्ण	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 1	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 2	कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम 3
CO1	1	3	1	3		1	1	2
CO2	2	1	2	-		1	2	3
CO3	1	1	2	3		1	2	1

CO4	1	2	-	3		2	3	2
CO5	1	1	2	-				5
CO6								